आधुनिक - भारत

भाग - I

यूरोपीय कम्पनी का आगमन

By → Anshul Verma

Whatsup → 7054797939

FB Page → @sdclassessdr

① भारत मे यूरोपीय कम्पनी का आगमन

A. VERMA
7054797939

② पुर्तगाली आगमन

वास्कोडिगामा

यह भारत आने वाला प्रथम पुर्तगाली था। 20 मई 1498 ई० को गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मजीद/अहमद इब्न मजीद की सहायता से भारत में केरल के मालाबार तट मे स्थित कालीकट बंदरगाह पर पहुँचा।

- वह जिस जहाज से आया था उनका नाम साओ ग्रेबियल था।
- केरल में उसका स्वागत वहाँ के हिंदू राजा जमोरिन ने किया।
- यहाँ से काली मिर्च ले जाकर उसके व्यापार से 60 गुना अधिक मुनाफा कमाया।
- 1502 ई० में यह दूसरी बार भारत आया।
- 1524 ई० में वह पुन: भारत आया और 1527 ई० में ही इसकी मृत्यु भारत मे ही कोचीन में हुई।

A. VERMA

↳ व्यापार मे अत्यधिक फायदो को देखकर उनका (पुर्तगालियो) का लालच बढ़ गया। वे यहाँ अपने फॅक्ट्री स्थापित करने की सोचने लगे।

पेड्रो अल्वरेज कैब्राल → 1500 ई० में यह भारत आने वाला दूसरा पुर्तगाली था।

A. VERMA
7054797939

1503 → पुर्तगालियो ने अपनी पहली फॅक्ट्री कोचीन में खोली।

1505 → पुर्तगालियो ने अपनी दूसरी फॅक्ट्री कन्नूर मे खोला।

Scanned with CamScanner

③ पुर्तगाली - आगमन

फ्रांसिस्को डि अल्मीड़ा (1505 - 1509)

- भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का प्रथम गर्वनर था।
- इसने भारत में पुर्तगाली साम्राज्य को इस्तादो-डी-इण्डिया कहकर पुकारा।
- इसने हिंद महासागर में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से "ब्लू वाटर पॉलिसी" या "शान्त जल की नीति" अपनायी।

A. VERMA
7054797939

अंलफांसो डी अल्बुकर्क (1509 - 1515)

- 1515 ई० मे इसकी मृत्यु भारत के गोवा मे हुई।
- इसे भारत मे पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- इसने सती प्रथा को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया।
- इसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया।
- इसके समकालीन राजा विजयनगर साम्राज्य के प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय थे।
- 1510 ई० में इसने बीजापुर के शासक आदिलशाह से गोवा को जीत लिया।

A. VERMA

↳ अल्बुकर्क के बाद कई गर्वनर आये और धीरे - धीरे इनके साम्राज्य का विस्तार होता गया।

नीनो डी कुन्हा (1529-38)

- अल्बुकर्क के बाद यह प्रमुख गर्वनर था। इसने अपना मुख्यालय गोवा को बनाया।

A. VERMA
7054797939

Scanned with CamScanner

(4) पुर्तगाली - आगमन

पुर्तगालियो की देन

A.VERMA
7054797939

- भारत मे पहली बार प्रिंटिंग प्रेस की शुरूआत की।
- जहाँगीर के शासनकाल मे तंबाकू की खेती प्रारंभ की।
- जहाज निर्माण उद्योग की शुरूआत।
- आलू, मक्का
- प्रमुख फल - पपीता, लीची, सन्तरा
- बादाम, काजू, मूंगफली

अन्य प्रमुख बाते →

A.VERMA

↳ 1661 ई० में पुर्तगालियो ने राजकुमारी कैथरीन का विवाह, इंग्लैण्ड के सम्राट चार्ल्स - II से कराया और उपहार स्वरूप बंबई भेंट मे दी। जिसे बाद में 1668 मे 10 पौंड वार्षिक पर (किराया) ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया।

↳ पुर्तगालीयो द्वारा हुगली को बंगाल की खाड़ी मे समुद्री लूटपाट के अड्डे में इस्तेमाल करते थे।

↳ पुर्तगाली सबसे पहले आये और सबसे बाद मे गये।

↳ स्वतंत्रा क्रान्ति के दौरान (1947) मे गोवा का गर्वनर जनरल जोसे फेरेइरा बोस्मा था।

↳ स्वतंत्रा के बाद भी पुर्तगाली गोवा और दमन दीव पर जमे रहे। 1961 ई० मे इन्हें यहाँ से भगाया गया।

Scanned with CamScanner

(5) डचों का आगमन

A. VERMA 7054797939

S. D. Classes

डच (II यूरोपियन कम्पनी)

- हालैण्ड या नीदरलैण्ड के निवासियों को डच कहा जाता है। इसकी राजधानी एम्स्टर्डम थी।
- 1595-96 ई० में "कार्नेलियस हाउटमैन" के नेतृत्व में पहला डच अभियान दल पूर्वी जगत पहुँचा। डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 ई० में हालैण्ड में हुई।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी को हालैण्ड सरकार द्वारा 21 वर्षों के लिए भारत और पूर्वी जगत के साथ व्यापार के अधिकार दिये गये।

A. VERMA 7054797939

A. VERMA

डच

- डचों ने कोरोमंडल तट को अपने व्यापार का आधार बनाया और 1605 ई० में अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना मसूलीपट्टनम (आंध्र-प्रदेश) में स्थापित की।
- दूसरी फैक्ट्री पेत्तोपोली (निजामपट्टनम) में स्थापित की।
- 1610 ई० में डचों ने चन्द्रगिरी के राजा के साथ समझौता करके पुलीकट में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना की। इसे मुख्यालय बनाया।
- भारत के साथ व्यापार के लिए सर्वप्रथम संयुक्त पूंजी डचों ने प्रारंभ की।
- 1759 ई० में अंग्रेजों के साथ हुये वेदारा के युद्ध में डचों की सम्पूर्ण शक्ति का अंत हो गया।
- भारत से वस्त्र निर्यात की सर्वप्रथम वस्तु बनाने का श्रेय डचों को दिया जाता है।
- डचों ने भारत में स्वर्ण सिक्के चलाये, जिसे पैगोडा सिक्के कहा गया।

A. VERMA 7054797939

ईस्ट इंडिया कंपनी (अंग्रेज) का आगमन

(6)

अंग्रेज (East India Combany)

- अंग्रेजों के एक ट्रेडर समूह ने 1599 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। इस कम्पनी की स्थापना डचों की कम्पनी से पहले हुई।
- 31 Dec. 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ टेलर प्रथम ने एक शाही फरमान द्वारा 15 वर्षों के व्यापार की अनुमति दी। जिसे जेम्स प्रथम ने बाद अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दी।
- ईस्ट इंडिया कंपनी का पूर्व नाम "गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट्स आफ लन्दन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इण्डीज" था। जिसे 1833 चार्टर अधि. से छोटा किया।

S.D. Classes
A.VERMA 7054797939

अंग्रेजो का आगमन

- 1599 ई. में जान मिल्डेन हॉल पहला अंग्रेज भारत आया।
- विलियम हॉकिन्स का भारत आगमन (1608 ई.)
- टामस रो का भारत आगमन (1615 ई.)
- जान सुरमन के नेतृत्व में अंग्रेज प्रतिनिधि दल का आगमन (1717 ई.)

A.VERMA 7054797939
S.D. Classes
S.D. Classes

↳ जान मिल्डेन हॉल, स्थल मार्ग से भारत आया था।

(7) ईस्ट इंडिया कंपनी (अंग्रेज) का आगमन

S.D. Classes Barhni-Siddharthnagar
A.VERMA

विलियम हॉकिन्स का आगमन

S.D. Classes Barhni-Siddharthnagar
A.VERMA
7054797939

सन् 1608 ई० में विलियम हॉकिन्स 'हेक्टर' नामक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर पहुँचा। हॉकिन्स जो तुर्की भाषा बोल सकता था, अकबर के नाम जेम्स प्रथम का पत्र लेकर मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में पहुँचा। उसने तुर्की भाषा में जहाँगीर से बात की, जिससे जहाँगीर बहुत प्रभावित हुआ। हॉकिन्स ने सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति माँगी। प्रारम्भ में अनुमति प्रदान की गई, परन्तु पुर्तगाली से शत्रुता तथा सूरत के सौदागरों के विरोध के चलते, अनुमति रद्द कर दी। लेकिन बाद में 1613 ई० में अंग्रेजो को सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति मिल गई। 1613 ई० में सूरत स्थापित फैक्ट्री अंग्रेजो का प्रथम स्थायी कारखाना था।

1611 ई० में इनकी एक अस्थायी कारखाना मसूलीपट्टनम या मछलीपट्टनम में स्थापित हो चुकी थी।

थामस रो का आगमन

A.VERMA

1615 ई० में ब्रिटिश सम्राट जेम्स I का दूत बनकर थामस रो सूरत बन्दरगाह पहुँचा। अजमेर पहुँचकर जहाँगीर से मुलाकात की।

1633 ई० में पूर्वी तट पर अंग्रेजो ने अपना पहला कारखाना बालासोर और हरिहरपुरा (उड़ीसा) में स्थापित किया। 1639 ई० में फ्रांसिस डे नामक अंग्रेज को चंद्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर प्राप्त किया। यहाँ पर अंग्रेजो ने फोर्ट सेंट जार्ज नामक एक दुर्ग की स्थापना की।

1698 ई० में बंगाल के तत्कालीन सूबेदार अजीम-उस-शान ने सुतानाती, कालिकाता, और गोविंदपुर नामक

Scanned with CamScanner

(3) ईस्ट इंडिया कंपनी (अंग्रेज) का आगमन

तीन गाँवो की जमींदारी ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान कर दी। इसके लिए अंग्रेजो को पुराने जमींदार इब्राहिम खान को 1200 रु प्रति वर्ष देने थे। इन तीनो गाँवो को मिलाकर ही आधुनिक कलकत्ता शहर की नींव पड़ी।

जान सुरमन का प्रतिनिधि दल

↓

1717 ई० मे जान सुरमन के नेतृत्व में अंग्रेज व्यापार प्रतिनिधियो का एक दल मुगल सम्राट फर्रुखसियर के दरबार में उपस्थित हुआ। इस दल में जार्ज हैमिल्टन (सर्जन डाक्टर) भी थे। उस समय फर्रुखसियर एक गम्भीर फोड़े से पीड़ित था। जिसका सफलतापूर्वक इलाज हैमिल्टन ने कर दिया।

फर्रुखसियर का फरमान →

अपने इलाज से खुश होकर, इसने एक फरमान जारी किया। इस फरमान के अंतर्गत कंपनी को बंगाल, बिहार व उड़ीसा में 3000 रु वार्षिक के बदले करमुक्त व्यापार का अधिकार दे दिया। इसे दस्तक कहा गया।

ब्रिटिश इतिहासकार ऑर्म/ओर्म्स ने इसे कम्पनी के इतिहास का मैग्नाकार्टा कहा।

बाद में यह फरमान बंगाल के नवाब और कंपनी के बीच संघर्ष का कारण बना।

A. VERMA 7054797939

S.D. Classes

ANSHUL VERMA

7054797939

Scanned with CamScanner

⑨ डेन / डेनिस का आगमन

S.D. Classes

डेन / डेनिस

- अंग्रेजो के बाद आने वाली यूरोपीय कंपनी 'डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी' थी। इसकी स्थापना 1616 ई० मे हुई थी।
- इस कम्पनी का उद्देश्य भी व्यापार करना था, परंतु वे सफल नहीं हो पाये, और अन्त मे अपने आप को ईसाई धर्म के प्रचार मे लगाया।
- 1620 ई० मे तंजौर जिले के ट्रांकेबार तथा दूसरी फैक्ट्री बंगाल के सीरमपुर / श्रीरामपुर मे खोला।
- 1745 ई० मे इन्होंने अपनी सारी फैक्ट्री अंग्रेजो को बेच दी, और वापस चले गये।

A. VERMA
7054797939

ANSHUL VERMA
7054797939

S.D. Classes
S.D. Classes

(10) फ्रांसीसी का आगमन

फ्रांसीसी

A. VERMA
7054797939

- भारत मे सबसे अंतिम मे आने वाली यूरोपीय कम्पनी फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी थी।
- 1664 ई० मे फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवाँ के एक मंत्री कोलबर्ट के प्रयासो से एक व्यापारिक कंपनी का गठन किया। यह एक सरकारी कम्पनी थी।
- इनकी पहली कंपनी फ्रांसिस कैरो के द्वारा 1668 ई० मे सूरत मे स्थापित हुई

A. VERMA

- सरकारा ने भारत मे फ्रांसीसी की दूसरी कोठी मसुलीपट्टनम में 1669 ई० मे स्थापित की थी।
- 1690-92 ई० में फ्रैंको मार्टिन ने बंगाल में चन्द्रनगर की प्रसिद्ध कोठी बनाई। जो बंगाल की गतिविधियो का प्रमुख केंद्र था।
- फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले के समय मे फ्रांसीसी प्रभुत्व की स्थापना हुई। अपने प्रभुत्व की स्थापना हेतु अंग्रेज और फ्रांसीसी मे संघर्ष आरम्भ हो गया।

आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष

A. VERMA
7054797939

- प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई०)
- II कर्नाटक युद्ध (1749-54 ई०)
- III कर्नाटक युद्ध (1758-63 ई०)
- वांडीवाश का युद्ध (1760 ई०)

Scanned with CamScanner

(11) आंग्ल - फ्रांसीसी संबंध (संघर्ष)

कर्नाटक का प्रथम युद्ध

कारण

इस युद्ध का तात्कालिक कारण ब्रिटिश कमिश्नर बार्नेट के द्वारा फ्रांसीसी जलपोतो को पकड़ लेना था।

परिणाम

इस युद्ध में फ्रांसीसियो का पलड़ा भारी था इसी युद्ध के एक अंग के रूप में 'सेन्ट टोमे' या 'अड्यार का युद्ध' लड़ा गया।

समाप्ति

इस युद्ध की समाप्ति एक्स-लॉ-शॉपेल की सन्धि से हुई।

सेन्ट टोमे का युद्ध (1748) →

यह युद्ध कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा कैप्टन पैराडाइज (फ्रांसीसी नेतृत्व) के बीच लड़ा गया। फ्रांसीसी सेना विजयी रही।

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध

समाप्ति → पाण्डिचेरी की सन्धि से हुई थी।

कारण

इस युद्ध का कारण हैदराबाद एवं कर्नाटक के होल में हो रहे उत्तराधिकार के संघर्ष में दोनों कम्पनियो का उलझ जाना था।

परिणाम

हैदराबाद मे नासिर जंग का साथ तथा कर्नाटक में अनवरुद्दीन का साथ अंग्रेजो ने दिया।

हैदराबाद में मुजफ्फर जंग तथा कर्नाटक में चांदा साहब का साथ फ्रांसीसियो ने दिया।

Scanned with CamScanner

इसी युद्ध के अंग के रूप में एक और युद्ध हुआ, जिसे 'अम्बूर का युद्ध' कहा गया।

अम्बूर का युद्ध (1749) → मुजफ्फर जंग, चांदा साहब और डूप्ले की फ्रांसीसी संयुक्त सेना ने कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में अनवरुद्दीन पराजित हुआ और मारा गया। अनवरुद्दीन का पुत्र मुहम्मद अली ने त्रिचरापल्ली में भागकर शरण ली। चांदा साहब कर्नाटक के नवाब बन गये।

अर्काट का प्रसिद्ध घेरा (1751 ई०) → मुहम्मद अली ने त्रिचरापल्ली में शरण लिया, वहाँ उसके पीछे डूप्ले एवं चांदा साहब भी पहुँच गये। जिससे कर्नाटक की राजधानी अर्काट खाली हो गया। इसी का फायदा उठाकर क्लाइव (अंग्रेज) ने वहाँ कब्जा कर लिया। इससे डूप्ले के भाग्य का सर्वनाश हो गया। मुहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बन गया। डूप्ले को वापस बुला लिया गया उसकी जगह गोडेहू को भारत भेजा गया।

S.D. Classes

कर्नाटक का तृतीय युद्ध

S.D. Classes
A. VERMA 7054797939

कारण – यह युद्ध आस्ट्रिया और प्रशा के बीच यूरोप में चलने वाले सप्तवर्षीय युद्ध से प्रभावित था।

परिणाम – इस युद्ध में ऑस्ट्रिया का पक्ष फ्रांस ने, प्रशा का पक्ष इंग्लैंड ने लिया।

समाप्ति – पेरिस की संधि से

वांडीवाश का युद्ध (1760) → इस युद्ध में फ्रांसीसियों का अस्तित्व समाप्त हो गया भारत में।

Scanned with CamScanner